भारतीय समाज और अस्पृश्यता

प्रो.डॉ.एम.एम.जगानी

राजनीती विज्ञान विभाग,

एम्.एन.कॉलेज,विसनगर।

भारत की आत्मा गावो में निवास करती है | चंद शहेरो को देखकर हम अपने देश की सच्ची दशा का अनुमान नही लगा सकते | हमारे लिए यह आवश्यक है की हम यहाँ उनके जीवन के बारेमे अध्ययन करे तथा यह देखेकी उस जीवन में क्या कमिया या दोष आ गये है तथा उन्हें किस प्रकार सुधार जा सकता है ।

[1]प्रकृतिने भारतको अपनी देने खुले हाथो दी है तथापि भारत आज दरिद्र देश है इसका कारण यह है की हमारा देश एक दीर्घ कल तक विदेशी शासन के अनार्गत रहा है विदेशिओ को हमारे विकास में कोई रूचि नहीं थी । इतना ही नहीं उनसे जितना संभव हो सका उन्होंने देशका हर प्रकार से शोषण किया और उनकी सहायता से हमारे देशके कुछ स्वार्थी लोगोने भी अपने देशवासियो को निर्दयता पूर्वक लुटा तथा उन्हें अज्ञान माय बनाये रखा ।

[2]भारतकी समाजव्यवस्थामे जाती प्रथा का सबसे अधिक खराब प्रभाव यह हुआकि समाजमे एक जातिका सदस्य दूसरी जातिके लिए अछूत बन गया । हिन्दू धर्म में प्रत्येक हिन्दू दुसरोके लिए अछूत हो गया । अंतर केवल इतना ही है की कोई कम अछूत है और कोई अधिक अछुत है । आज इन जतिओको हम अछूत कहेते है छूता छुत केवल उन्ही तक सिमित नहीं है ।

व्यास स्मृति में कहा गया है की –

[3]वर्दिक नविता गोप आशाय : कुम्भकारक:

वरिगकीकरात कायस्थ माथाकार कुटुम्बिन:॥

व् रंगभेद चाण्डाल शासस्यव कोतक: ॥११॥

एतेडत्यजा: सभाख्यता ये बालो य गवशिता ।

एषा सम्भाषरणात्स्नान दर्शनाद्रर्कवीक्षणम ॥१२॥

अर्थात बढई, नाइ, ग्वाले, कुम्भार, बनिया, किसान, कायस्थ, माली, भंगी, कोल, चांडाल ये सब अन्त्यज कहलाते है । इनपर गिरे सूर्य का दर्शन करना हिन् तथा इनसे बात चीत करने के बाद स्नान करना चाहिया तभी मनुष्य शुध्ध होता है ।

[४]छूता छूत का जन्म हिन्दुओ के कर्मकांड मैसे हुआ वास्तवमे वह हिन्दू धर्मके बुनियादी सिद्धान्तोके विरुद्ध है । जाती प्रथाके कारण भारतीय समाजको लाभ के स्थान हानी ज्यादा हुई है । इसके दोषोका वर्णन हम इस प्रकार कर सकते है ।

१. जाती प्रथाने समाज संगठन की निवको खोखला कर डाला है आज भारत मै चार हजार से ज्यादा जातिया है । जिनमे से प्रत्येक का अपना संकीर्ण क्षेत्र है । इस प्रथाने भयंकर जतिवाद को जन्म दिया है जिसके कारण हमारी सामाजिक एकता प्रायः लुस ही हो गई है ।
२. जातिगत भावनाओ के फेलाने के कारण राष्ट्रीयता के विकास मे बहुत कठिनाई आ पड़ी है तथा अबभी पड रही है ।
३. आर्थिक क्षेत्रमें श्रम को ठीक ढंगसे विभाजित इस जाती प्रथाने असंभव बनादिया है ।
४. जाती प्रथाने देशके भीतर उंच नीच की विषम भावना का जन्म देकर एक दूषित वातावरण की सृष्टि दी है । हिन्दू समाज अस्पुश्यता के कलंक के लिए सर्वथा उतरदाई है । जाती प्रथा के कारण अछूत विस्तारोमे धर्म परिवर्तन के लिए उतरदाई है ।
५. इसी प्रथाके कारण समाजमे विवाह का अर्थात पति पत्नी चुननेका क्षेत्र अत्यंत सिमित व् संकुचित हो गया है । इसी कारण से आज कन्या अपने मातापिता के लिए अभिशाप बनगई है ।
६. जातिवाद जनतंत्र का परम शत्रु है । जतिवाद्के कारण ही जनतंत्र की नीव खोखली हो जाएगी ।

छूता छूत निवारण के लिए डॉ. आम्बेडकर ने यह रीती निकाली की हरिजन सामुहिक रुपमे हिन्दू धर्म को छोड़कर बौध धर्म अपनाले वे स्वयं और उनके हजारो अनुयाई बौध बन गए । परन्तु यह रीती कोई स्थाई हल नहीं दे सकती यह वैसा ही प्रयत्न है जैसा की मुसलमान मुल्लाओ और इसाई पादरियों ने अछूत माने जाने वाले लोंगोके सामने रखा था तथा उन्हें भारी संख्यामे धर्म परिवर्तन कराया था । वास्तविक समाधान तब होगा जब उनकी आर्थिक दशाए बदलेगी या तो उनके वर्तमान धंधे उनसे ले लिए जाए उन्हें इतना सम्मानपूर्वक और वेतान्वाला बनादिया जाये की उनको अपनाने के लिए सवर्ण हिन्दुभी तैयार होजाए ।

"छूता छूत हमारे लिए धार्मिक और राजनितिक दोनों द्रष्टिकोण से एक महा चुनोती है । महात्मा गाँधीके शब्दोमे अछुतपन हिन्दू धर्म पर एक महान पाप है जिसे धोनेके लिए प्रत्येक भारतियको प्रायश्चित करना चाहिए । अस्पुश्यता हिन्दू धर्म का अंग नहीं बल्कि उसमे घुसी हुई सडाव है वहेम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिंदुका धर्म है उसका परम कर्तव्य है ।

जन्म के कारण मानी जानेवाली इस अस्पुश्यता की बदौलत अहिंसा धर्मका और सर्वजिवात्माका लोप हो जाता है । इसके मूलमे संयम नहीं, बल्कि उच्चता की उद्दत भावना ही है । इसने धर्म के नाम पर करोडो मनुष्योंकी स्थिति गुलामो जैसी करडाली है ।

अस्पुश्योकी स्थिति सुधारने के लिए उनसे उनके परम्परागत धंधे छुड़वानेकी अथवा उन धंधो के प्रति अरुचि उत्पन्न करनेकी आवश्यकता नहीं है । उनमे किये जाने वाले जिस कामका परिणाम एसा निकले वह काम उनकी सेवाका नहीं बल्कि असेवाका होंगा । बुनकर बुनता रहे और चमार चमड़ा चकाता रहे और फिरभी वह अस्पुश्य न माना जाए तभी कहाजाएगा की अस्पुश्यता मिटी है इन धंधो को सुधारने और इनका विकास करने की बड़ी जरुरत है ।

सामाजिक गंदगीको दूर करके उसे हररोज साफ रखनेका कार्य पवित्र है व् यदि यह कार्य नियमित रूपसे न हो तो समूचा समाज मौतके मुहमे जाएगा । सफाई के इस कामका दर्जा समाजके लिए आवश्यक दुसरे कर्मोके समान ही ऊँचा समजा जाना चाहिए । इस काममे अनेक सुधारोकी गुजारिश है । कहलाते हुए संस्कारी लोग इस कामको करने लगेतो वे इसमे कई प्रकारके सुधार कर सकते है ।

समाज में सफाई करनेवाली भंगी जातिको बिलकुल ही नीच वर्ण की मानकर हमने भंगी समाजकी स्थिति अत्यंत दयनीय बनादी है और इसके परिणाम स्वरूप हमारा समूचा समाज गन्दी हालतमे रहेने लगा है । इसका उपाय यह है की हरेक परिवार अपने पायखानोकी सफाई का और दूसरी सफाई का काम उसी तरह खुद करले जिस तरह वह अपनी रसोई खुद बना लेता है । फिर सार्वजनिक सफाई का काम रह जाएगा । उसके लिए भले ही अलग से पेशेवर लोग रहे । लेकिन इस धंधे का दरजा दुसरे ऊँचे माने जानेवाले धन्धोके समान ही रहे और इस कामको करनेके तरीकोमे इतना सुधार किया जाए की यह काम बहुत सुघडताके साथ और आरोग्यप्रद रीतिसे कियाजा सके और इसे करनेवाला बहुत स्वच्छ रह सके ।

अपनेको संस्कारी माननेवाले वर्ण अस्पुश्योको अपनी जुठी दे अथवा सडाहुआ, उतरा हुआ या अशुद्ध बना हुआ अन्न दे और उनके साथ पशु से भी अधिक हल्का व्यवहार करे तो वह असंस्कारिता भी है और पापभी है ।

संदर्भ

१.भारतीय लोकजीवन और शासन व्यवस्था, प्रो.नेमिशरण मित्तल-राजहंस प्रकाशन मंदिर मेरठ उ.प्र

२.गांधी विचार दोहन-कि.घ.मशरूवाला नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद-पेज नं-३२

३. भारतीय लोकजीवन और शासन व्यवस्था, प्रो.नेमिशरण मित्तल-राजहंस प्रकाशन मंदिर मेरठ उ.प्र पेज.नं-६९

४.सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा –मो.क.गाँधी-नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद पेज.नं ६१

५.ग्राम-स्वराज – मो.क.गाँधी पेज नं-३०-३१ नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद